दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)-M-**HL3**

Name: फिरोज आलम

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): ✓

Reg. Number: AWAKE-19/F05

Center & Date: DELHI 20/07/19

UPSC Roll No. (*If allotted*): 0833129

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करै पिउ फेरा?।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।
बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झँखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पँखि।।

नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है। ये पंक्तियाँ सूफी कवि 'जायसीकृत' महाकाव्य पद्मावत के 'नागमती वियोग खंड' से उद्धृत हैं।

यहाँ बारहमासा शैली में नागमती के प्रवास विप्रलंभ को दिखाया गया है। नागमती, पति (रत्नसेन) के वियोग में इतनी कमजोर हो गई है कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उसके शरीर से रक्त भी सूख गया है।

विडम्बना यह है कि सभी से पूछने के बाद भी रत्नसेन का पता नहीं मिल रहा है।

सौंदर्य

भाषा - ठेठ अवधी।
रस - विप्रलंभ श्रृंगार।
अलंकार - अनुप्रास, यमक।
छंद - दोहा व चौपाई।

विशेष

1- अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन जिसमें ऊहात्मकता दिखती है।

2- ऐसे ही सूर ने भी गोपियों में खास विरह दिखाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' में सूर ने गोपियों की विरह भावना को अभिव्यक्ति दी है। कृष्ण जी दायित्वों की पूर्ति हेतु मथुरा चले गए हैं। जिस कारण गोपियों को ब्रज का सौंदर्य अतिकष्टकारी प्रतीत होता है। जो चंद्रमा शीतलता प्रदान करने हेतु जगत प्रसिद्ध है वह भी विरही गोपियों को अग्नि समान प्रतीत हो रहा है।

गोपियाँ विनती करती है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

हे प्रभु! कब दर्शन दोगे? तुम्हारे बिना सब सूना सूना लगता है।

सौंदर्य :

भाषा - ब्रज।

रस - विप्रलंभ शृंगार।

अलंकार - रूपक, यमक।

विशेष

1- प्रासंगिक उपादानों के माध्यम से विरह अभिव्यक्ति।

2- उदाहरणों के माध्यम से कथनों को सिद्ध।

3- आत्मसंवेदन व आत्मविस्तार का भाव दिखता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।

तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

प्रस्तुत दोहा जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा संकलित 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है। बिहारी शृंगार के कवि हैं। यहाँ बिहारी ने संयोग शृंगार का वर्णन किया है।

नायक कहता है कि सभी शृंगारिक क्रियों में तुम्हारे मना करने के कारण मेरा प्रत्येक उत्सव फीका पड़ जाता है। तुमको अब सारी शिकायतें अलग रखकर शृंगार के आनंद में डूब जाना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौंदर्य

भाषा – संगीतात्मक ब्रजभाषा।

रस – शृंगार।

अलंकार – अनुप्रास (बिरदु बारक बारनु में ब से उत्पन्न)

विशेष

1– बिहारी अनुभाव के कवि हैं। यहाँ भी अनुभाव योग्यता लक्षित है।

2– गतिशील बिम्बों का निर्माण हुआ है।

3– ऐसे दोहों के कारण ही ग्रियर्सन ने बिहारी को सर्वश्रेष्ठ बताया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

महाप्राण निराला की कालजयी रचना 'राम की शक्ति पूजा' में संकलित मे पंक्तियाँ सानु सभा के दौरान वर्णित की गई हैं।

राम की सेना को रावण द्वारा लगातार हार मिलने से निराशा का माहौल बना हुआ है। आकाश अति अंधकारमय है तथा जीत के लिए कोई दिशा नजर नहीं आ रही है।

समुंद्र भी चिंताओं की भांती उमड़ रहा है तथा अग्नि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बरस रही है।

अर्थात् हृदय संशय में है तथा जीत की कोई उम्मीद नहीं दिखाई दे रही है।

सौंदर्य

भाषा - तत्सम प्रधान खड़ी बोली।

रस - शांत रस।

अलंकार - उत्प्रेक्षा (भू-धर ज्यों)

विशेष

1- निराला ने यहाँ राम (ईश्वर) का मानवीकरण किया है।

2- प्राकृतिक परिस्थितियों के द्वारा संशय का सुंदर चित्रण हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,

है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।

पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,

ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई।

'भारत-भारती' उद्बोधनपरक रचना है जिसमें 'मैथिलीशरण गुप्त' ने भारतीय जनमानस को जागृत करने के लिए; विशेषतः इन पंक्तियों में कवियों को जागृत करने के लिए काव्य की भूमिका का वर्णन किया है।

गुप्त जी बताते हैं कि आदिकाल से ही कविता के माध्यम से त्याग, विनय, दया आदि शमत्व भावों का प्रसार होता रहा है।

लेकिन अब (रीतिकाल) में यह केवल भोग विलास तथा वासना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है।

काव्य सौंदर्य

- भाषा - अभिधात्मक शैली प्रधान खड़ी बोली।
- अलंकार — अनुप्रास।
- ज्योत्सना, अनुगामिनी जैसे तत्सम शब्द।

विशेष

1- कवियों को जागृत करने के लिए उन्होंने अन्यत्र भी कहा है—
"केवल मनोरंजन ही न कवि का कर्म होना चाहिए। उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"

2- इन पंक्तियों में 'तुकान्त' का निर्वाह हुआ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा है।' इस अभिमत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरसागर में गोपियों को प्रवास विप्रलंभ में दिखाया गया है।

जब गोपियाँ ब्रज में भी कृष्ण के साथ रहती थी तब वह गोचारण सहित दैनिक कार्यों में भी संलग्न थी।

परंतु जब कृष्ण जी कुछ दायित्वों की पूर्ति हेतु ब्रज से मथुरा चले जाते हैं तो वह केवल विप्रलंभ में ही दिखायी गई हैं।

गोपियाँ स्वयं तो सामाजिक सक्रियता से वंचित हो ही जाती

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

हैं, वे अन्य प्राकृतिक वस्तुओं से भी निष्क्रियता की अपेक्षा करती हैं तथा अपनी संवेदना का आरोपण करते हुए कहती हैं –

"मधुबन तुम कत रहत हरे,
बिरह वियोग स्याम सुंदर के ठाड़े क्यों न जरे।"

गोपियों को इसी बैर-बैर के सभी वस्तुएं जो पहले मनभावन लगती थी तथा उनमें सक्रियता उत्पन्न करती थी वे भी अब बेकार की वस्तुएं लगती हैं तथा वे सक्रिय नहीं हो पाती हैं –

"तब ये लता लगति अति शीतल,
अब विषम ज्वाल की पुंजें।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन शतप्रतिशत यह कहना कि गोपियों का विरह ~~के~~ ठाले का धंधा है सही नहीं होगा। क्योंकि उन्होंने स्वयं को तसल्ली देकर अब सक्रियता को और प्रेरित होने का निर्णय लिया है -

"जहाँ-जहाँ रहो राज करो।"

जब गोपियाँ राजनीति पर व्यंग्य करती हैं (हरि हैं राजनीति पढ़ि आए) या उद्धव के निर्गुण व शुष्क योग पर प्रहार कर अपने सगुण की रक्षा करती दिखती हैं तो निश्चित ही उन्हें सामाजिक रूप से सक्रिय मानना पड़ेगा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गोपियों ने जिस वाग्विदग्धता व तर्क क्षमता का उपयोग अपनी वाणी में किया है वह उनकी सक्रियता को ही प्रदर्शित करता है।

उन्होंने केवल आँसू ही नहीं बहाए हैं बल्कि अब सक्रिय होकर उनका विश्लेषण तथा इस विरह के कारणों को समाप्त करने का हर संभव प्रयास किया है।

अतः सूरसागर में वर्णित गोपियों के विरह को केवल रोने-गाने का धंधा कहना उचित नहीं होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर की काव्यभाषा को लेकर विद्वानों में मतभेद है। आचार्य शुक्ल इनकी भाषा को काव्यात्मक भाषा नहीं मानते जबकि हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर को 'भाषा का डिक्टेटर' कहते हैं।

यदि विश्लेषण करें तो कबीर की भाषा में वे सभी विशेषताएँ दिखती हैं जो बिहारी, मुक्तिबोध तथा निराला जैसे पुरोधा कवियों की भाषा में होती हैं।

- भाषा में व्यंग्य क्षमता एक बड़ी विशेषता मानी जाती है। जब कबीर पण्डों व मुल्लों पर व्यंग्य करते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हैं तो उनकी भाषा में तेज आ जाता है। व्यंग्य भाषा में कबीर को नागार्जुन के समक्ष मान्यता दी जाती है।

कबीर ने भाषा में संदर्भ विशेष के अनुसार शब्दों का प्रयोग किया है जो काव्यभाषा की एक बड़ी विशेषता होती है। वे जब ~~हिन्दुओं~~ मुसलमानों के लिए कोई कथन कहते हैं तो उर्दू-फारसी शब्द बढ़ा देते हैं व जब हिन्दुओं के लिए तो तत्सम-तद्भव शब्द बढ़ा देते हैं।

उनकी काव्यभाषा में बिम्ब से लेकर प्रतीक योजना, नाद सौंदर्यता तथा कोमलता, कठोरता देखी जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जो समीक्षक कबीर की भाषा को काव्योचित नहीं मानते, वे प्रायः संध्या भाषा व साधनात्मक रहस्यवाद की शब्दावली का उदाहरण देते हैं।

"नैया बिच नदिया डूबत जाए"

यह सही है कि संध्या भाषा ने उनके काव्य में दुरुहता पैदा की है लेकिन वह उनके काव्य का थोड़ा सा ही अंशमात्र है। इस छोटे से अंश के लिए कबीर की काव्यभाषा को काव्य के लिए अनुपयोगी कहना सही नहीं होगा।

कबीर का भाषा को लेकर दृष्टिकोण भी काव्यात्मकता के नजदीक है —

"संस्कृत है कूपजल, भाखा बहता नीर"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायसी व कबीर दोनों ने ही अपनी काव्य अभिव्यक्ति में रहस्यवाद का प्रयोग किया है।

कबीर मूलतः साधनात्मक रहस्यवाद से जुड़े थे। इसलिए उनका रहस्यवाद शुष्क व नीरस है क्योंकि वह अंतर्मुखी रहस्यवाद है। —

"मोको कहा ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में
न मैं देवल ना मस्जिद न काबा कैलाश में।"

हालांकि बाद में कबीर सूफियों के भावनात्मक रहस्यवाद में भी दीक्षित हुए तथा भावुक व सरस रहस्यवाद की अभिव्यक्ति की।

"हमारा यार है हममे हमन को इंतजारी क्या।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ तक जायसी के रहस्यवाद का प्रश्न है तो वह मूलतः सूफी से तथा भावनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव अधिक था। इस रहस्यवाद में जगत को भी ईश्वर की अभिव्यक्ति माना जाता है। इसलिए वे प्रत्येक कण में सौंदर्य देख पाए।

आचार्य शुक्ल ने जायसी के रहस्यवाद की प्रशंसा करते हुए कहा है कि - जायसी का रहस्यवाद माधुर्य से भरा पड़ा है जबकि कबीर का रहस्यवाद शुष्क व नीरस है।

दरअसल कबीर पर नाथों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व अद्वैतवाद का प्रभाव होने के कारण उनके रहस्यवाद में वह भावुकता व माधुर्य नजर नहीं आता जो जायसी के रहस्यवाद में है।

हालांकि जायसी ने भी कुछ जगहों पर साधनात्मक रहस्यवाद का सहारा लिया है-

"गढ़ तस बांक जैसी तोरी काया"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कबीर व जायसी ने एक-दूसरे के रहस्यवाद को प्रभावित भी किया तथा उससे अलग मूल भाव भी व्यक्त किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

अन्योक्ति व समासोक्ति दो अलंकार हैं। जिस रचना में प्रस्तुत कथा की अपेक्षा अप्रस्तुत कथा प्रमुख होती है वहा अन्योक्ति होता है तथा जब प्रस्तुत कथा ही महत्वपूर्ण हो लेकिन अप्रस्तुत अर्थ भी बना रहे वहाँ समासोक्ति होता है।

पद्मावत को लेकर विद्वानों में मतभेद है कि इसे अन्योक्ति माना जाए या समासोक्तिपरक रचना माना जाए।

आचार्य शुक्ल का मत है कि पद्मावत की प्रस्तुत कथा ही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महत्वपूर्ण है लेकिन 'बीच-बीच में आध्यात्मिकता के भी संकेत मिलते रहते हैं जिससे इसका अन्य भी अर्थ निकलता है अतः इसे समासोक्ति माना जाए।

जॉर्ज ग्रियर्सन ने तो इसे अन्योक्ति माना है तथा पद्मावत के अंत में दिए गए प्रतीकों को आधार बनाया है जिसमें पद्मावती को खुदा, नागमती को दुनिया-धंधा तथा अलाउद्दीन को शैतान बताया गया है।

इसकी सबसे महत्वपूर्ण व्याख्या साही व शिरीष ने की है। उनका मानना है कि पद्मावत में प्रस्तुत कथा ही महत्वपूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

है तथा तसव्वुफ केवल एक मुहावरा भर है जो अन्य प्रचलित मुहावरों की तरह गौण महत्व रखता है।

उन्होंने तर्क दिया है कि बिना तसव्वुफ के भी कथा को पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। तथा जायसी ने लौकिक कथा को ही ज्यादा महत्व दिया है।

यदि अप्रस्तुत कथा व तसव्वुफ की अभिव्यक्ति को माना भी जाए तो वह रचना के अंतिम में ही लागू होता है इस बाद को कथा पूर्ण रूप से लौकिक कथा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

दरअसल पद्मावत लोकप्रचलित आख्यान पर आधारित है तथा इसमें लौकिक पक्ष अधिक हावी है। इसके बावजूद भी यह नहीं भूलना चाहिए कि जायसी मूलतः सूफी हैं तथा उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाओं में तसव्वुफ के माध्यम से आध्यात्मिक अभिव्यक्ति की है।

जहाँ तक पद्मावत का प्रश्न है इसमें प्रस्तुत कथा ही मुख्य है लेकिन कहीं-कहीं अप्रस्तुत अर्थ भी निकलता है इसलिए इसे समासोक्तिपरक रचना माना जाए न कि अन्योक्तिपरक रचना।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ''ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध को 'बिम्बों का सम्राट' कहा जाता है। निराला, सुर व नागार्जुन की तरह इन्होंने भी अपने काव्य को पाठक की चेतना अनुभूतियों का विषय बना दिया है।

छायावादी कवि निराला कोमल, विराट बनाते हैं तथा सूर शृंगार के संयोग-वियोग का बिम्बात्मक चित्रण करते हैं। परंतु ये कवि मूर्त विषय कोट ही बिम्ब बनाते नज़र आते हैं।

लेकिन 'ब्रह्मराक्षस' कविता बिम्ब निर्माण में नवीनता का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

परिचय इसलिए देती है क्योंकि इसने अवचेतन व अमूर्त विषय की बिम्बात्मक अभिव्यक्ति की है।

'ब्रह्मराक्षस' में वर्णित विषय मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष है जो नितांत आंतरिक मनोभावों का विषय है। इसे भी यदि बिम्बात्मकता में चित्रित किया गया है तो यह नवीनता का ही परिचय है।

कविता के प्रारम्भ में ही बिम्ब बनने लगते हैं -

"परित्यक्त सूनी पड़ी एक बावड़ी"

आगे कविता में आभ्यंतर व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विश्वचेतना के संघर्ष को भी बिम्ब के माध्यम से दिखाया गया है।

"पिस गया वह,
दो बाहरी पाटों के बीच
कैसी ट्रैजडी है नीच"

यहाँ गणित जैसे विषय को भी दशमलव तथा आसमानी सितारों के माध्यम से ऐन्द्रिक अनुभूति का विषय बना दिया है।

इसलिए उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 'ब्रह्मराक्षस' कविता बिम्ब निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धता पर प्रकाश डालिये। 15

वक्रता व वाग्विदग्धता अभिव्यक्ति की शैली है जिसमें बात को व्यंग्य के माध्यम से घुमा कर की जाती है ताकि वह ज्यादा प्रभावशाली हो सके।

अतिभावुकता की स्थिति में कथन वक्रता को ग्रहण कर लेते हैं। सूर की गोपियों की भावुकता तो जग जाहिर है तथा उनके कथन भावप्रेषित वक्रता को शामिल कर लेते हैं।

आचार्य शुक्ल ने से सूर की वक्रता व वाग्विदग्धता की प्रशंसा में कहा है कि - "सूर

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के पास बात को कहलवाने के न जाने कितने ढंग है।"

वक्रता व वाग्विदग्धता यशोदा के कथनों में भी दिखती है-

"नंद ब्रज लीजे ठोकी बजाए।"

जब गोपियाँ कृष्ण की भ्रमर वृत्ति पर व्यंग्य करती है तो वह वाग्विदग्धतापूर्वक कथन करती हैं-

"हरि है राजनीति पढि आए"

गोपियाँ जब उद्धव के ज्ञान व निर्गुण ब्रह्म पर सवाल उठाती है तो वह वक्रता व वाग्विदग्धता का प्रयोग करती हैं।

'निर्गुन कौन देस को वासी'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सूर ने इस शैली का प्रयोग प्राकृतिक वर्णन में भी किया है। गोपियाँ मधुबन से वाग्विदग्धता में कहती हैं-

"मधुबन तुम कत रहत हरे,
विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे।"

अतः सूर ने इस शैली का अपने काव्य में भरपूर प्रयोग किया है जो यशोदा तथा गोपियों के कथनों में स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'कामायनी' के आधार पर जयशंकर प्रसाद के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Section–B

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजियेः 10 × 5 = 50

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

प्रस्तुत दोहा श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह कौ अंग' से उद्धृत है।

यहाँ ईश्वर दर्शन के लिए कबीर की विरह भावना वर्णित हुई है।

कबीर कहते हैं कि आपके दर्शन की प्रतीक्षा में नैना भी दुख गए है तथा फिर भी मे आँखें रात-दिन तुम्हारे दर्शन के लिए आतुर रहती हैं।

वो दिन कौन सा होगा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जब हरि आप मुझे अपने दर्शन देंगे तथा मेरी अभिलाषा पूरी होगी।

सौंदर्य

रस - विप्रलंभ श्रृंगार।

अलंकार - अनुप्रास। (अंतरी आपरु)

भाषा - पंचमेल खिचड़ी।

विशेष

1- इन पंक्तियों में भावनात्मक रहस्यवाद दृष्टव्य है।

2- कबीर की विरह भावना अन्य भी व्यक्त हुई है -

'जिह्वा में छाला पड़ा, राम पुकारि-पुकारि')

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

सूफीकाव्यधारा के शिखर कवि जायसी ने 'नागमती वियोग खण्ड' में नागमती के विरह का वर्णन किया है।

आचार्य शुक्ल ने इस विरह वर्णन को हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु बताया है।

नागमती को रत्नसेन (पति) के विरह में प्रत्येक मौसम कष्टकारी लग रहा है। वह अंधेरे से, बिजली की चमक तथा बादलों के गर्जन से घबरा रही है तथा बादलों के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समान पति के विरह में उसकी आँखों से अश्रु बह रहे हैं।

सौंदर्य

भाषा - ठेठ अवधी।

रस - विप्रलंभ श्रृंगार।

अलंकार — अनुप्रास, यमक, उपमा।

छंद - दोहा व चौपाई की कड़वकबद्ध शैली।

विशेष

1- जायसी ने नागमती के विरह का ~~साधारी~~ साधारणीकरण किया है।

2- प्राकृतिक वर्णन में विरह अभिव्यक्ति को सघन बनाया है।

3- विरह-वर्णन में कहीं-कहीं ऊहात्मकता विद्यमान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

छायावाद के शिखर कवि निराला की कालजय कविता 'राम की शक्ति पूजा' में वर्णित ये पंक्तियाँ समर समाप्ति के बाद सान्ध्य सभा की ओर जाते हुए राम के शरीर का वर्णन कर रही हैं। रघुनायक आगे चल रहे हैं तथा उनके चरण भक्खन के समान कोमल है। बाणों की पेटिका खुल गई है। राम के बाल खुलकर कंधों पर फैले हुए है तथा ऐसे लग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रहे हैं जैसे किसी पर्वत पर अंधकार उतर आया हो।

कुछ समीक्षकों ने इस पंक्तियों में निराला के आत्म वर्णन को भी देखा है।

सौंदर्य

- भाषा — तत्सम प्रधान भाषा जो बोधगम्य है।

रस — शांत।

अलंकार — उत्प्रेक्षा (जैसे)

विशेष

1- निराला को बिम्बों का सम्राट माना जाता है। यहाँ बिम्बात्मक वर्णन है।

2- तत्सम व तद्भव शब्दावली का सुंदर मेल किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundati

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ये पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखे गए उद्बोधनपरक काव्य के 'वर्तमान खण्ड' से उद्धृत हैं। यहाँ कवि भारतीय जनमानस को जागृत करना चाहता है।

जिन महलों में कभी सुगायक गाया करते थे तथा मिठास से वाणी भर जाती थी आज उन्हीं प्रासादों में उल्लू बोलते हैं।

आगे कहते हैं कि जो जाति अपने प्राचीन चिन्हों पर गर्व नहीं करती व उन्हें संरक्षित करने का प्रयास नहीं करती वह जाति नष्ट

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो जाती है तथा अब अधिक सोना मृत्यु का लक्षण कहलायगा।

सौंदर्य

भाषा - अभिधात्मक खड़ी बोली।

काव्यरूप - उद्बोधनपरक मुक्तक।

अलंकार - अनुप्रास।

विशेष

1. गुप्त जी मुख्यतः अभिधा के कवि हैं लेकिन यहाँ 'उल्लू' के माध्यम से लक्षणा का भी प्रयोग हुआ है।
2. तुकांतता गुप्त जी का विशेष गुण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

नयी कविता के पुरोधा कवि अज्ञेय द्वारा रचित कविता "असाध्यवीणा" के आरम्भ में रचित ये पंक्तियाँ राज-सभा में राजा के द्वारा कही गई हैं।

अनेक कलावंत अपने ज्ञान व गुण के माध्यम से वीणा को नहीं बजा सके हैं तथा कीरीटी तरु से निर्मित यह वीणा अब असाध्य वीणा ही कहलाने लगी है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लेकिन जिस दिन प्रियंवद जैसा अहंकार शून्य, आत्मसंयमित व आत्मनिवेदित कलावंत इसे साधेगा तो यह अवश्य ही बज उठेगी।

सौंदर्य

भाषा - तत्सम प्रधान खड़ी बोली।

रस - शांत।

अलंकार - अनुप्रास, यमक।

विशेष

1- सृजनात्मक तत्व का वर्णन किया गया है।

2- प्रसिद्ध जापानी आख्यान का काव्य में प्रयोग।

3- आत्मनिवेदन व अहंकारशून्यता के गुण की स्थापना का प्रयास।

Copyright – Drishti The Vision Foundat

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रासंगिकता से तात्पर्य यह है कि कबीर ने जिन समस्याओं को उठाया तथा जो समाधान प्रस्तुत किए वे आज भी प्रासंगिक हैं या नहीं।

कबीर ने समाज में प्रेम के महत्व को रेखांकित किया तथा आज भी सामाजिक सौहार्द तथा व्यक्तिगत विश्वास की बेहतरी के लिए प्रेम की आवश्यकता है।

'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय'

आज जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता अपने विकराल रूप में सामने खड़ी है तथा पूरा विश्व इससे अपने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वार्थ सिद्धि कर रहे हैं। कबीर ऐसे लोगों के विषय में आम जनता को पहले ही सचेत करके आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

"अरे इन दोउन राह न पाई
हिन्दुन की हिन्दुआई देखी, तुरकन की तुरकाई।"

द्विवेदी जी ने कहा था कि "भारत का नायक वही हो सकता है जो समन्वय का अपार धैर्य लाया हो।" आज विभिन्न क्षेत्रों, समाजों व सम्प्रदायों में समन्वय की आवश्यकता है। इस समन्वय की भावना को आज भी कबीर काव्य पढ़कर ~~सीखा~~ सीखा जा सकता है। जब वे भक्ति-ज्ञान योग तथा सूफी-नाथों की पद्धति में समन्वय करते दिखाई देते हैं—

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"गुन में निर्गुण, निर्गुण में गुण,
बाट छाणि क्यों बहिए।"

वर्तमान में व्यक्ति अपनी वाणी को संयमित नहीं रखते तथा अनेक कथनों से दूसरों सम्प्रदायों को आहत पहुँचाते हैं। कबीर ने कहा "ऐसो वाणी बोलिए मन का आपा खोय"

मॉब लिंचिंग व बढ़ती हिंसा ने समाज में विद्वेष पैदा किया है। यदि कबीर के संदेश — 'सई के सब जीव हैं' को ध्यान में रखा जाए तो इस निरर्थक हिंसा से बचा जा सकता है।

कबीर का दृष्टिकोण भी प्रासंगिक है वे जातिगत श्रेष्ठतावादिता तथा धार्मिक अंधेपन से बचने की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सलाह देते हैं। लोक न्यूला का प्रसार वर्तमान की सच्चाई है। कबीर ने अंधियन की देखी? का समाज को संदेश दिया।

कबीर का शिल्पगत दृष्टिकोण भी प्रासंगिक है वे काव्य को अभिजात की नहीं आमजन की अभिव्यक्ति मानते हैं।

'संस्कृत है कूपजल, भाखा बहता नीर'

Copyright – Drishti The Vision Foundat

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साधारण के प्रति प्रतिबद्ध होने के कारण ही नागार्जुन को 'जनकवि' की संज्ञा दी जाती है।

नागार्जुन के काव्य में रिक्शे वाले, बस के ड्राइवर से लेकर दलितों-किसानों की सहज भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। वे जनसाधारण की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति में अपनी प्रगतिवादी विचारधारा को भी सामने नहीं आने देते हैं।

"क्या है दक्षिण क्या है वाम
जनता को रोटी से काम।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जनजीवन की समस्याएँ उन्होंने हर स्तर पर व्यक्त की हैं। 'हरिजन गाथा' में दलितों की समस्याओं को उठाते हैं तो 'अकाल व उसके बाद' में भूख की समस्या को उठाते हैं।

किसानों की समस्याओं को चित्रित तो उनके काव्य में बिखरे पड़े हैं। वे सामान्य लोगों के प्रति राजनीतिक जवाबदेहिता को भी उठाते हैं तथा झूठे शब्दवाद ने किस तरह आम जन का नुकसान किया है इसे व्यक्त करते हैं

"दस हजार मरें या दस लाख मरें
पर इनका क्या रहे हमारा।"

Copyright – Drishti The Vision Found

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशिष्ट व उदात्त की ~~अपेक्षा~~ उन्होंने व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति की है तथा उनकी झूठी संवेदनाओं को जनता के सामने रखा है।

"हरिजन गिरिजन भूखे मरते, हम डोलें वन-वन में
तुम रेशम की साड़ी डाटे, उड़ती रहो गगन में।"

साधारण के प्रति वे अति संवेदनशील हैं तथा उनकी समस्याओं को पूरी हृदयता से साथ आते हैं तथा इससे थोड़ा सा भी विचलन इन्हें नागवार है।

"जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ
जनकवि हूँ साफ कहूँगा क्यों हकलाऊँ।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

मुक्तिबोध ने ब्रह्मराक्षस में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष को दिखाया है।

यदि ध्यानपूर्वक देखें तो यह मार्क्सवादी मान्यता 'बुद्धिजीवी का ऐतिहासिक दायित्व' तो है ही। इसमें अस्तित्ववादी मान्यताएँ भी स्पष्ट रूप से आती हैं।

अस्तित्ववादी मान्यता के अनुसार व्यक्ति अपनी अंतरात्मा के अनुसार ही प्रामाणिक जीवन जी सकता है। इसके विरुद्ध जीने पर उसमें आत्मसंघर्ष, आत्मग्लानी, व्यक्तित्व का

Copyright – Drishti The Vision Foundat

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विखण्डन जैसे भाव पैदा हो जाएँगे।

ब्रह्मराक्षस भी ~~पूर्ण रूप~~ ~~से~~ अपनी अंतर्रात्मा के अनुसार पूर्ण रूप से विश्वचेतस बनना चाहता है लेकिन वह बन नहीं पाता। इसलिए अस्तित्ववादी मान्यताओं के अनुसार उसके व्यक्तित्व का विखण्डन हो जाता है।

"पिस गया वह,
भीतरी व बाहरी पाटों के बीच"

ब्रह्मराक्षस को पश्चाताप भी होता है तथा वह कविता में अपराध बोध को साफ करने के लिए हाथ-पैर छपाछप करता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

दिखाया गया है।

इसलिए कहा जा सकता है कि ब्रह्मराक्षस 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के 'आत्मसंघर्ष' के साथ-साथ अस्तित्ववादी भ्रान्तियों व खण्डित व्यक्तित्व का प्रतीक भी दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Founda

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation